दूध की कहानी गाय की ज़बानी

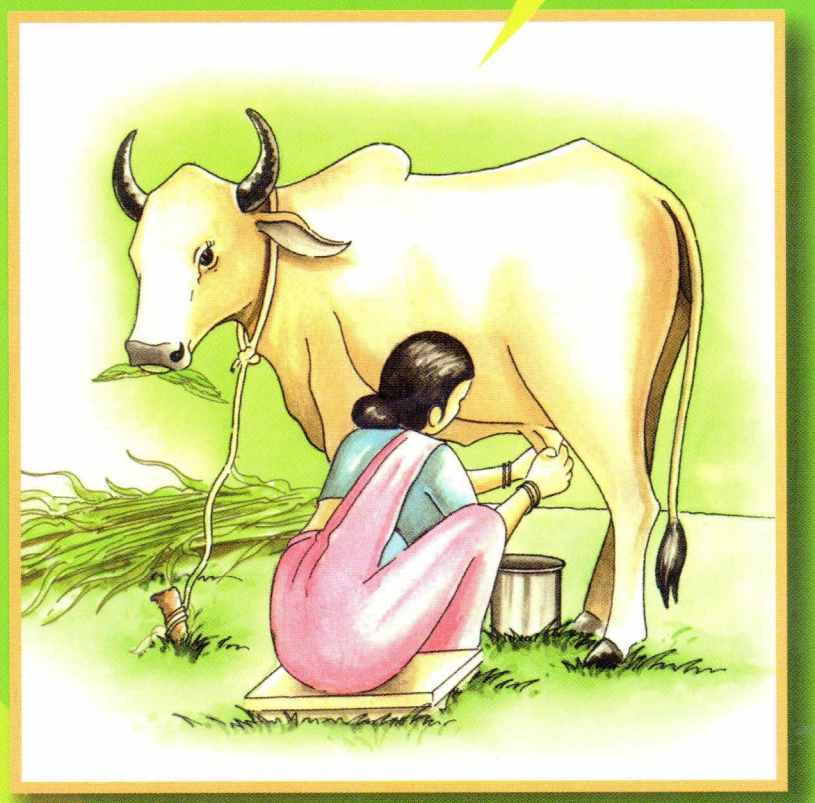

उत्पादक के स्तर पर
स्वच्छ दूध का उत्पादन

गुणवत्ता एवं संयंत्र प्रबंधन
राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड
आणंद
भारत

प्रस्तावना

घर में दूध देनेवाली गाय या भैंस को रखकर दूध सहकारी समिति में देकर अपनी ज़िम्मेदारी ख़तम नहीं होती । अभी हमारा देश दूध उत्पादन में दुनिया में पहले नंबर पर पहुँच गया है । मगर बदलती हुई परिस्थिति में दूध स्वच्छ हो, जल्दी से न बिगड़े, तथा बीमारी न फैलाये, यह ज़रुरी हो गया है । इसी स्वच्छ दूध से अच्छी चीज़ें बनें तो हमें और हमारी डेरी दोनों को फायदा होगा । इसके लिये हम बहुत कुछ कर सकते हैं जैसे कि,

(१) पशु को साफ-सुथरा और निरोगी रखना ।

(२) पशु रखने की जगह साफ-सुथरी रखना ।

(३) उसे साफ पीने का पानी देना ।

(४) दूध दुहने और रखने के लिये स्टेनलेस स्टील के साफ बर्तन का उपयोग करना ।

(५) दूध दुहने से पहले हाथों को साबुन से धोना ।

(६) थन को साफ पानी से धोकर साफ धुले हुए कपड़े से सुखाना ।

(७) दूध दुहने से पहले हर थन से एक-दो धार दूध निकाल कर फेंक देना ।

(८) दूध दुहने वाले साफ-सुथरे और निरोगी इंसान हों, जो बीड़ी, तंबाकू, पान आदि दुहने के समय न उपयोग करें ।

(९) दूध देते पशु को हरा चारा खिलाना ।

(१०) दुहने के बाद थनों को साफ पानी से धोना और फिर जीवाणुनाशक घोल में डुबोना या उन पर जीवाणुनाशक घोल छिड़कना जिससे वे थनैला रोग से बचें ।

(११) समिति तक दूध ढककर जल्दी पहुँचाना ।

(१२) समिति पर दूध को, अगर हो सके तो, ठंडा रखना जिससे वह न बिगड़े ।

अगर इन सब बातों पर हम अमल करें तो हमारे द्वारा समिति को पहुँचाये हुए दूध से हम सबको बहुत फायदा हो सकता है । आइये, हम स्वच्छ दूध उत्पादन के काम में जुट जायें ।

वरिष्ठ महाप्रबंधक
(गुणवत्ता एवं संयंत्र प्रबंधन)
राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड
आणंद - ३८८००१, गुजरात
भारत

दूध की कहानी गाय की ज़बानी

राजनगर गांव में बनवारी नामक एक पशुपालक रहता था । उसके दो नन्हे-मुन्ने बच्चे और प्यारी सी घरवाली राधा थी । बनवारी का परिवार खुशहाल और सुखी था क्योंकि उसकी गाय गंगा और भैंस जमुना ढेर सारा दूध देती थीं । बनवारी गंगा और जमुना का दूध अपने गांव की सहकारी दूध समिति में देता था, जिसका वह कई बरसों से सदस्य था । समिति में दूध देने से बनवारी को अच्छी आमदनी होती थी और उसके घर में किसी चीज़ की कमी नहीं थी । उनका खान-पान अच्छा था, बच्चे गांव के स्कूल में पढ़ते थे और हर त्यौहार को सब उत्साह और खुशी से मनाते थे । बनवारी खुद को बहुत भाग्यवान समझता था, कि उसके पास गंगा जैसी गाय और जमुना जैसी भैंस है । राधा और बच्चे भी गंगा और जमुना से बहुत प्यार करते थे ।

बनवारी का खुशहाल परिवार

लेकिन इस हंसते-खेलते परिवार पर अचानक दुःख के बादल छाने लगे । गंगा को कोई रोग लग गया और वह बीमार रहने लगी । बनवारी ने उसका इलाज घर पर ही किया परंतु कोई असर नहीं हुआ और गंगा का दूध कम और खराब आने लगा । बनवारी की आमदनी कम हो गयी और उसके घर में तरह-तरह की परेशानियां आने लगी । राधा के लाख मना करने पर भी इन परेशानियों से तंग आकर बनवारी ने गंगा को बेचने का फैसला कर लिया ।

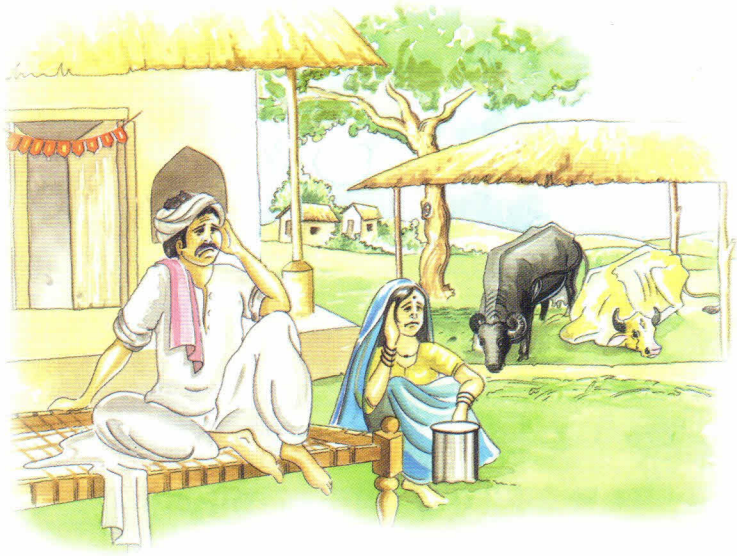

गंगा बीमार, परिवार चिंतित, आमदनी कम

उन्हीं दिनों पास के गांव में पशुओं का मेला लगा हुआ था । बनवारी ने तय किया कि वह मेले में गंगा को बेचकर एक नयी गाय ले आयेगा ।

बनवारी गंगा को बेचने के लिए मेले की ओर जा रहा है

दूसरे दिन बनवारी गंगा को लेकर मेले के लिए निकलने को तैयार हुआ । राधा और बच्चे गंगा को पकड़ कर रोने लगे । बनवारी की भी आँखें भर आयीं पर उसने अपना दिल कड़ा किया और घर वालों को समझाकर गंगा को लेकर मेले की ओर चल पड़ा ।

आधे रास्ते में पहुँच कर बनवारी कुछ देर आराम करने के लिए एक पेड़ के नीचे रुक गया । उसका मन भी उदास था और गंगा की आंसू भरी आँखों को देखकर उसने एक आह भरी और कहा - ''मुझे माफ कर दो गंगा ।'' बनवारी सोच में डूबा था तभी उसने एक आवाज़ सुनी - ''भैया'' उसने पलटकर देखा तो गंगा उससे बातें कर रही थी । ''भैया, मुझे अपने परिवार से अलग मत करो । मुझे मत बेचो, भैया ।'' बनवारी को विश्वास नहीं हुआ और उसे लगा जैसे वह सपना देख रहा है । यही सोचकर वह गंगा से बात करने लगा । उसने कहा, ''क्या करूँ गंगा, मैं मजबूर हूँ । तुम्हारे दूध के कम और खराब होने से हमारी आमदनी काफ़ी कम हो गई है । आमदनी बढ़ाने के लिए ज़रुरी है कि मैं तुम्हें बेचकर दूसरी गाय ले आऊँ । मुझे तुम्हें बेचने से दुख हो रहा है, पर न जाने तुम्हें कौन-सा रोग लग गया है कि तुम्हारा दूध कम तो हो ही गया है साथ ही खराब भी हो गया है ।''

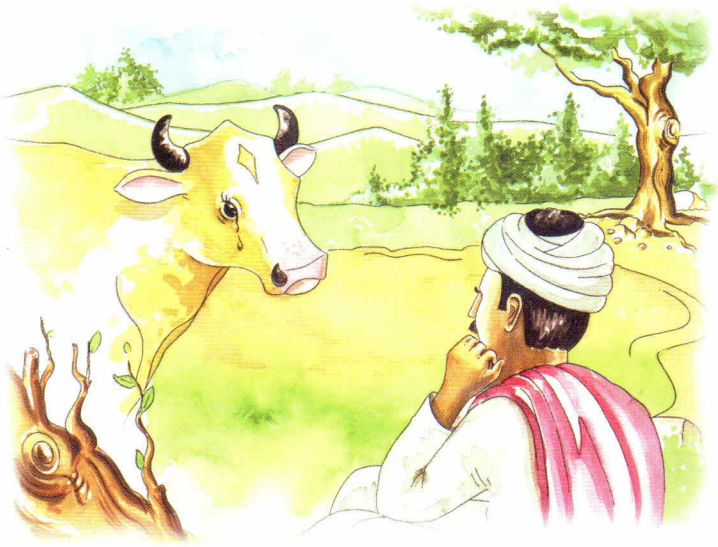

रास्ते में गंगा बनवारी से बातें करती है

''लेकिन इसमें मेरा क्या दोष है ?'' गंगा ने पूछा,

गहरी सांस लेकर बनवारी ने हामी भरी, ''हाँ गंगा, जैसी ऊपर वाले की मरज़ी ।''

गंगा ने कहा, ''इसमें ऊपर वाले का कोई हाथ नहीं है । माफ़ करना भैया, पर सच तो ये है कि सारी ग़लती तुम्हारी और राधा भाभी की है । आप लोगों को मवेशियों का ख़याल रखना नहीं आता है ।''

बनवारी ने हैरानी से पूछा ''यह तुम क्या कह रही हो गंगा ? हम तो कई पीढ़ियों से पशुपालन का काम करते आये हैं ।'' गंगा ने कहा, ''इसे समझने के लिये मैं तुम्हें दूध की कहानी सुनाती हूँ ।''

बनवारी कुछ समझा नहीं और उसने पूछा ''दूध की कहानी ?''

''हाँ, स्वच्छ और ताज़ा दूध निकालने और उसकी गुणवत्ता बनाये रखने के लिये पशु की देखभाल कैसे करें यही सब है दूध की कहानी में ।''

''ये कहानी तुम्हें किसने सुनायी ?'' बनवारी ने हैरत से पूछा ।

गंगा ने कहा, ''एक दिन मैं और जमुना हरा चारा चरने खेतों में गई थीं । वहाँ हमें गौरी और पारो नाम की दो गायें और चम्पा नाम की भैंस मिली, जिन्हें कभी कोई बड़ी बीमारी नहीं होती थी और उनका दूध भी कभी खराब नहीं निकलता था ।''

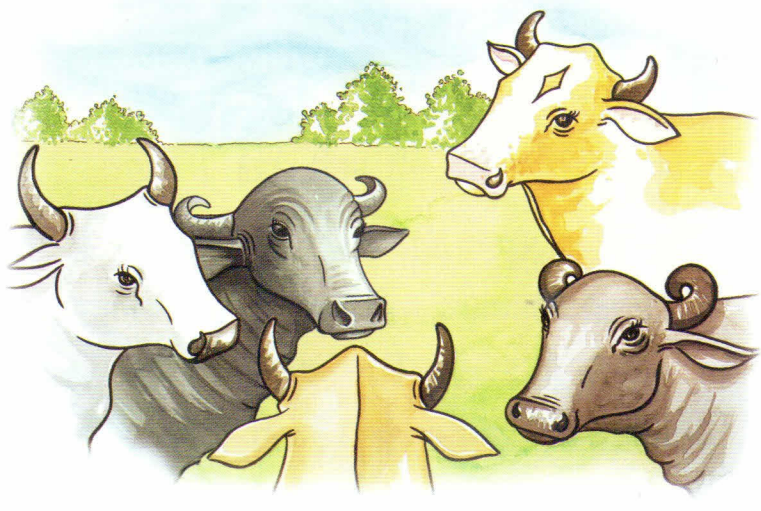

गौरी, चम्पा, पारो, गंगा और जमुना को दूध की कहानी सुनाती हैं

''अच्छा !''

''हाँ, उनका मालिक डेरी-विज्ञान की पढ़ाई कर चुका है । गौरी, चम्पा और पारो ने ही हमें अपने रहन-सहन और दूध स्वच्छ रखने की बातें बतायीं । मैं वही कहानी तुम्हें सुनाती हूँ ।''

''अच्छा, सुनाओ,'' बनवारी बोला ।

पारो : बहनों, तुम्हारी तकलीफ़ें देखकर मेरा मन उदास हो गया है । मैं और मेरी बहनें, गौरी और चम्पा तुम को बतायेंगी कि तुम्हारे मालिक को किस तरह तुम्हारा और दूध का ख़याल रखना चाहिये ।

चम्पा : हमारी बातें गौर से सुनना और अपने मालिक को बताना । अगर हमारे बताये उपायों का पालन किया गया तो तुम कभी बीमार नहीं पड़ोगी ।

गौरी : और बेहतर दूध दे सकोगी, जिससे तुम्हारे मालिक की कमाई भी पहले से ज़्यादा हो जायेगी ।

गंगा : बताओ बहन, हम भी तो यही चाहती हैं ।

गौरी : पहले दूध के बारे में कुछ सुन लो । अगर गाय या भैंस तंदुरस्त हो तो उनके थन से निकले दूध में कोई दोष नहीं होता ।

चम्पा : दूध की यही गुणवत्ता बनाये रखने के लिए पशु, पशु-घर, पशु-पालक, दूध रखने के बर्तन वगैरह की साफ-सफाई पर ज़्यादा ध्यान देना ज़रुरी हैं । साथ साथ दुहने के बाद जल्दी दूध को समिति तक पहुँचाना चाहिये । यदि इन बातों का ध्यान न रखा जाये तो दूध में सूक्ष्म जीवों की संख्या बढ़ जाती है और दूध खराब हो जाता है ।

जमुना : सूक्ष्म-जीव ? लेकिन मैं ने तो दूध में कभी सूक्ष्म-जीव नहीं देखे ।

बाकी सब : हाँ, हमने भी नहीं देखे ।

पारो : क्योंकि सूक्ष्म-जीव इतने छोटे होते हैं कि आँखों से नज़र नहीं आते । इन्हें जीवाणु भी कहते हैं । उन्हें सिर्फ सूक्ष्मदर्शक यंत्र से ही देखा जा सकता है । यही जीवाणु दूध की गुणवत्ता को कम कर देते हैं ।

जीवाणु देखने का सूक्ष्मदर्शक यंत्र

गंगा : यानि जो तुमने साफ-सफाई की बातें बतायीं उनका पालन किया जाये तो दूध अच्छा रहेगा ?

पारो : ठीक कहा बहन तुमने । अगर स्वच्छ और तंदुरस्त गाय या भैंस को साफ-सुथरा इंसान साफ बर्तन में दुहे और आसपास की जगह साफ हो तो दूध में जीवाणु की संख्या कम होती है । उससे दूध में मिट्टी, मक्खी इत्यादि भी नहीं आते ।

चम्पा : और अगर ऐसे दूध को ढके हुए स्टील के बर्तन में जल्दी ही समिति तक पहुँचाया जाये तो दूध की गुणवत्ता अधिक समय तक बनी रहती है ।

पारो : तुम सबको यह जानकर हैरानी होगी कि अगर ऊपर बतायी गई बातों का सही तरीके से पालन न करें तो डेरी तक आते-आते दूध की हर बूँद में जीवाणु की संख्या हज़ारों-लाखों तक हो जाती है !

जमुना : बाप रे !

गौरी : हाँ, और ये जीवाणु हर १५ से २० मिनट में दुगने हो जाते हैं जिससे दूध की गुणवत्ता तेज़ी से कम होने लगती है ।

जमुना : लेकिन स्वच्छ दूध से हमारे मालिक को क्या फायदा होगा ?

गौरी : अगर दूध साफ और ताज़ा रहेगा तो उसे पीने वाले सब तंदुरस्त रहेंगे और वे हमेशा उसी डेरी का दूध खरीदेंगे ।

चम्पा : ऐसे दूध से बनने वाली चीज़ें भी उच्च गुणवत्ता वाली और स्वादिष्ट होंगी । ऐसी चीज़ें जल्दी खराब नहीं होंगी । इससे पशुपालक और डेरी दोनों की आमदनी बढ़ेगी ।

गंगा : बहन, हमें दूध साफ रखने के उपाय बताओ ।

पारो : उसके लिये सबसे पहले गाय या भैंस को तंदुरस्त रखना होगा । उसे जहाँ रखा जाता है वह जगह साफ-सुथरी होनी चाहिये । तुम्हें कहाँ रखा जाता है ?

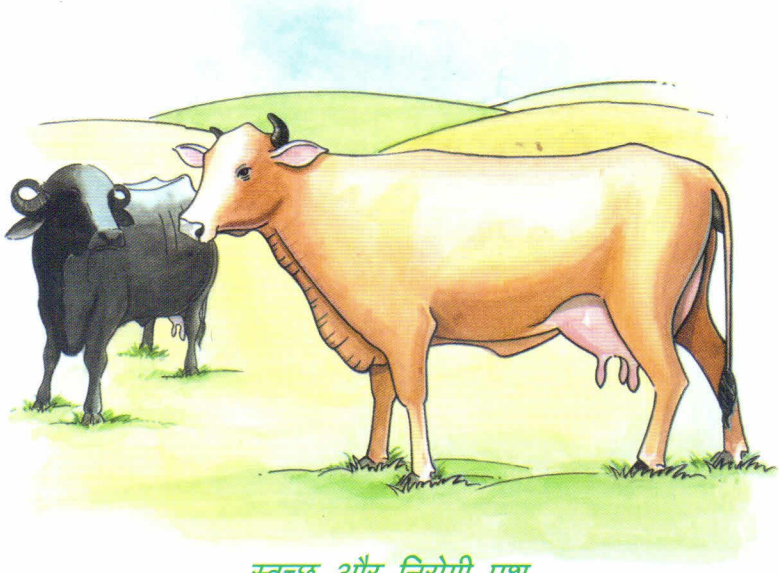

स्वच्छ और निरोगी पशु

जमुना : हमें तो घर के आगे पेड़ से बांध कर रखते हैं । लेकिन बैठने की जगह गंदी हो जाती है क्योंकि मूत्र और गोबर वगैरह वहाँ जमा हो जाता है । वहाँ कोई सफ़ाई भी नहीं करता है । और हम अपनी ही गंदगी में पड़े रहते हैं ।

चम्पा : रहने की जगह पर छत होनी चाहिये और जगह हवादार और आरामदायक होनी चाहिये । साथ में साफ पीने लायक पानी का प्रबंध होना चाहिये ।

गौरी : इस जगह को और आस-पास के क्षेत्र को साफ-सुथरा रखना चाहिये । दूध दुहने की जगह पर चारा जमा नहीं करना चाहिये ।

गाय या भैंस रखने की जगह पर कमसे कम मिट्टी की साफ-सुथरी फर्श तो होनी ही चाहिये । अगर पक्की फर्श बन जाये तो और अच्छा होगा ।

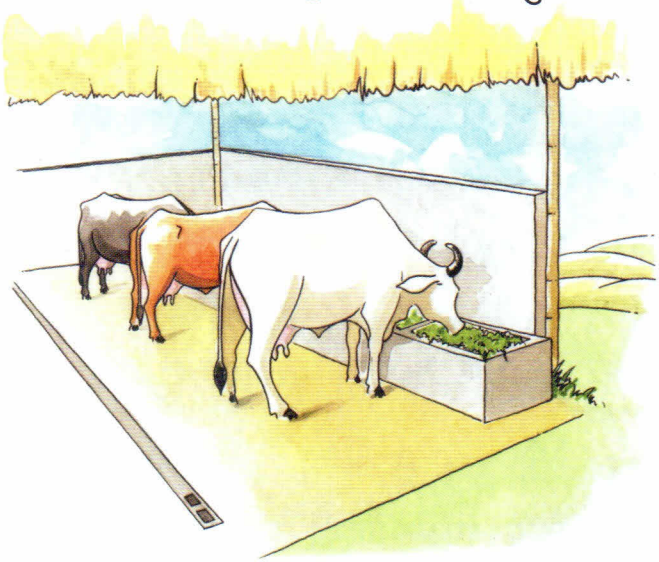

गाय या भैंस को साफ-सुथरी जगह में रखना चाहिये और फर्श पक्की और आरामदायक होनी चाहिये

गंगा : और क्या करना चाहिये ?

गौरी : जहाँ पशुओं को बांध कर रखा जाता है वह स्थान ऐसा हो कि पानी या मूत्र बहकर नाली से निकल जाये और सोखने के लिए गड्ढे में पहुँच जाय ।

पारो : गोबर को पशुओं से दूर खाद के गड्ढे या गोबर गैस प्लांट में डाल देना चाहिये ।

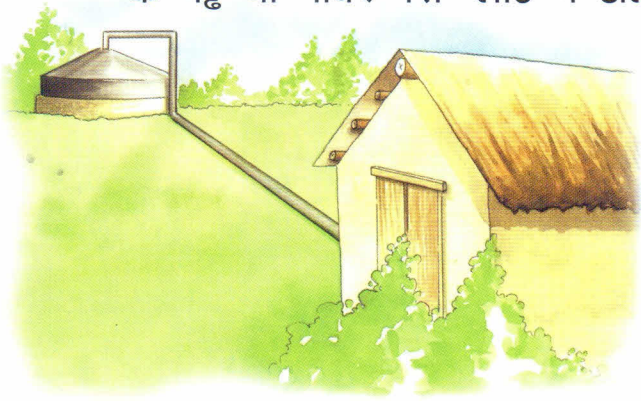

गोबर को पशुओं से दूर खाद के गड्ढे या गोबर गैस प्लांट में डाल देना चाहिये

इतनी कहानी सुनाकर गंगा चुप हो गयी । बनवारी उसकी बातें ध्यान से सुन रहा था और आगे कहानी सुनने को बेचैन था । उसने गंगा से पूछा, "मुझे पूरी कहानी सुनाओ । और क्या क्या समझाया तुम्हें पारो, गौरी और चम्पा ने ?"

गंगा बोली, ''उन्होंने मुझे बहुत सी बातें बतायीं, लेकिन हम यहीं बैठे रहे तो शाम हो जायेगी । घर में राधा भाभी और बच्चे परेशान हो रहे होंगे । चलो घर चलते हैं । बाकी कहानी मैं तुम्हें रास्ते में सुनाऊंगी ।''

बनवारी गंगा को लेकर घर लौट रहा है

बनवारी को भी बात सही लगी और वह गंगा की रस्सी खोलकर, उसे लेकर घर की ओर चल पड़ा । कुछ देर चलते ही उसे कुछ याद आया और वह अचानक रुक गया और बोला ''लेकिन हम तो मेले में जा रहे थे ।''

गंगा का मन जो घर चलने की खुशी से झूम उठा था, यह सुन कर उदास हो गया और वह बोली, ''भैया, मैं यह कहानी तुम्हें इसलिये सुना रही थी कि अगर तुम सही ढंग से मेरा ख़याल रखोगे, तो मैं कभी बीमार नहीं पड़ूँगी । जिससे मैं ज़्यादा, स्वच्छ और पौष्टिक दूध भी दूंगी और तुम्हारी कमाई भी बढ़ेगी । फिर भी तुम मुझे मेले में बेचना चाहते हो ?''

बनवारी ने कुछ देर सोचा और बोला, ''अच्छा, एक बार तुम्हारे बताये तरीके से तुम्हारा ख़याल रखते हैं, अगर तुम ठीक हो गयी तो हमेशा हमारे साथ रहोगी । चलो ! ...अब आगे की कहानी सुनाओ ।''

गंगा का मन फिर खुशी से झूम उठा और उसने कहानी आगे बढ़ायी, ''इसके बाद चम्पा और पारो ने दूध दुहने वाले के बारे में बताया ।''

पारो : अगर दूध दुहने वाला बीमार है, तो उसकी बीमारी का असर दूध पर भी होता है ।

चम्पा : इसलिये अगर किसी को सर्दी, खांसी, दस्त, क्षयरोग, चमड़ी का रोग या छूत की बीमारी हो या उसके लक्षण हों तो उसे दूध नहीं दुहना चाहिये ।

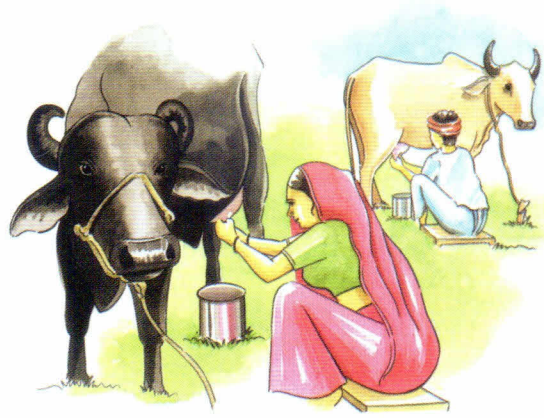

दूध दुहने वालों को साफ-सुथरा होना चाहिये

पारो : घाव, फुंसी, फ़ोड़े खुले हों या हाथ कहीं कट गया हो तो सही ढंग से मरहम-पट्टी किये बगैर भी दूध नहीं दुहना चाहिये ।

चम्पा : दूध दुहने वाला साफ-सुथरा होना चाहिये । उसके कपड़े धुले और साफ होने चाहिये । दूध दुहते समय दुहने वाले को और आस-पास के लोगों को खांसना या छींकना नहीं चाहिये । इस दौरान वहाँ पान, तंबाकू, बीड़ी, पान-मसाला इत्यादि का सेवन भी नहीं करना चाहिये ।

यह सब सुनकर बनवारी बोला, "सच गंगा, हम सभी ये ग़लतियां करते हैं । आगे से दूध दुहते समय इन सब बातों का ध्यान रखेंगे ।"

इतनी कहानी सुनते-सुनाते बनवारी और गंगा घर पहुँच गये । गंगा को वापस घर आया देख राधा और बच्चे बहुत खुश हुए । राधा ने चौंककर पूछा : "अरे ! गंगा को वापस ले आये ?" रात को खा-पीकर जब सारा परिवार सोने लगा तो बनवारी ने राधा को गंगा द्वारा बतायी दूध की कहानी सुनायी । राधा को सुनकर हैरत भी हुई और खुशी भी । दूसरे दिन बनवारी और राधा जब गंगा के पास गये तो राधा ने कहा, "गंगा, तुम्हारे भैया ने मुझे दूध की कहानी सुनाई । तुम फिक्र मत करो, हम अब तुम्हारा वैसे ही ख़याल रखेंगे जैसा तुम्हारी सखियों ने बताया ।"

गंगा की आँखों में खुशी के आंसू भर आये । वह बोली, "भाभी, मैं तो पूरी ज़िंदगी आप लोगों की सेवा करना चाहती हूँ, लेकिन और भी बातें हैं जिनका ख़याल रखना होगा, ताकि मैं और जमुना स्वस्थ रहकर स्वच्छ, पौष्टिक और ज़्यादा दूध दे पायें ।"

राधा ने कहा : "गंगा, हमें और किन-किन बातों का ख़याल रखना चाहिये ?"

गंगा ने बताया, "घर की मक्खी हमारी दुश्मन है । मक्खियों के शरीर पर लाखों की संख्या में जीवाणु पाये जाते हैं । ये कई बीमारियाँ पैदा करते हैं और दूध को खराब करते हैं ।"

राधा ने पूछा : "अच्छा ! इसका मतलब हुआ कि मक्खियों से दूध को बचाने से भी दूध साफ रहेगा ?"

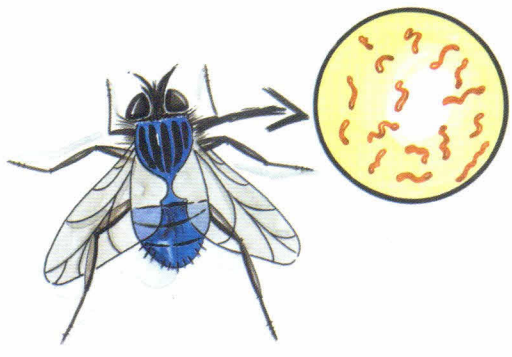

एक मक्खी के शरीर पर करीब ग्यारह लाख जीवाणु पाये जाते हैं

गंगा : हाँ, मक्खियों और गंदगी दोनों से दूध को बचाना ज़रुरी है । अगर गाय या भैंस के शरीर पर गंदगी है तो उस पर करोड़ों जीवाणु पाये जाते हैं ।

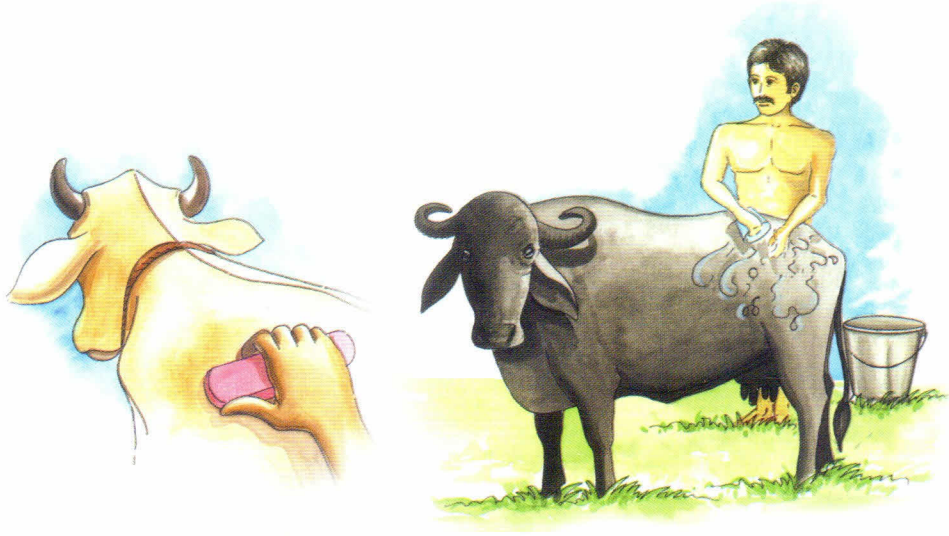

दुहने से पहले सर्दियों में पशुओं को नर्म ब्रश से घिस कर स्वच्छ रखें और गर्मी के दिनों में पानी से साफ करें

इसीलिये दुहने से पहले उन्हें साफ करना ज़रुरी है । गर्मी के दिनों में पशुओ को पानी से साफ करें और सर्दियों में नर्म ब्रश से घिस कर साफ रखें ताकि बालों और शरीर से जीवाणु दूर हो जायें ।

राधा : अच्छा ! इस बात का ध्यान रखूँगी ।

गंगा : साफ दूध के लिये बर्तन भी साफ होना चाहिये । दूध के बर्तन को साबुन से धो लेना चाहिये । बर्तन में मिट्टी न रहे, इसका पूरा ध्यान रखना चाहिये । उसे धोने के बाद तुरंत सुखाने के लिये साफ-सुथरी जगह पर उल्टा रखना चाहिये ।

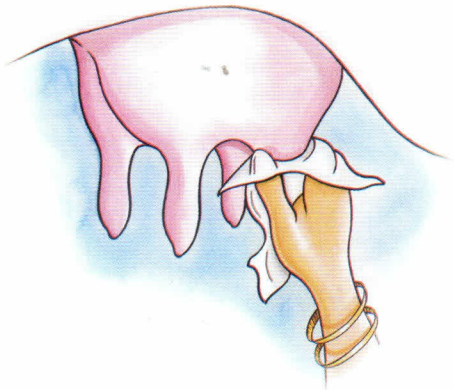

गाय और भैंस के हर थन को साफ पानी से धोकर साफ धुले हुए कपड़े से सुखाना चाहिये

राधा : ठीक है ।

गंगा : गाय और भैंस के थन को साफ पानी से धोकर साफ धुले हुये कपड़े से सुखाना चाहिये ।

राधा : लेकिन मैं तो वैसे ही करती हूँ ।

गंगा : तुम अपनी साड़ी के पल्लु से हमारे थन को पोंछती हो, जो गंदा हो सकता है । जबकि साफ-सुथरे कपड़े का उपयोग ज़रुरी है ।

दूध दुहने से पहले हर थन से एक-दो धार दूध को निकाल कर फेंक देना चाहिये । इससे थन में जमा हुए जीवाणु निकल जाते हैं ।

दुहने से पहले हर थन से एक-दो धार दूध निकाल कर फेंक देना चाहिये

दूध दुहने से पहले हाथों को साबुन से धो लेना चाहिये ।

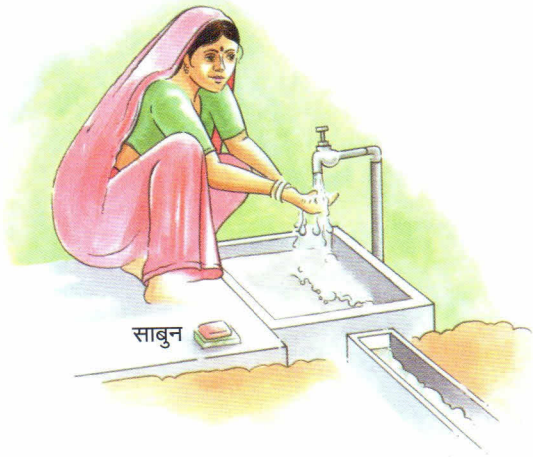

दूध दुहने से पहले हाथों को साबुन से धो लेना चाहिये

दुहने वाले को अपनी उंगलियों को दूध में कभी भी डुबोना नहीं चाहिये और पशु के थन पर तेल नहीं लगाना चाहिये ।

उंगलियों को दूध में डुबाना नहीं चाहिये

दूध दुहते समय अपने शरीर का कोई अंग या कपड़ा, दूध व दूध के बर्तन से नहीं लगने देना चाहिये ।

बनवारी : अच्छा !

गंगा : इसका ध्यान रखना चाहिये कि थनों में ज़रा भी दूध न बचा रहे क्योंकि उससे थन में जीवाणु तेज़ी से बढ़ते हैं । इससे पशु को रोग होने की संभावना बढ़ जाती है ।

दुहने के बाद थनों को साफ पानी से धोना चाहिये और जीवाणुनाशक (आयडोफोर) घोल में डुबोना या उन पर घोल छिड़कना चाहिये ।

दुहने के बाद थनों को साफ पानी से धोना चाहिये और जीवाणुनाशक घोल में डुबोना या उन पर घोल छिड़कना चाहिये

बनवारी : चलो, इस बात का भी ध्यान रखेंगे ।

गंगा : जिस बर्तन में दूध निकाला और समिति पर पहुँचाया जाये वह स्टैनलेस स्टील का ही होना चाहिये । उसका ढक्कन ठीक से बंद होना चाहिये, जिससे इसमें मक्खी, गंदगी आदि न गिर जाये । दूध को समिति पर जल्दी ही पहुँचाया जाये तभी दूध ठीक रहेगा ।

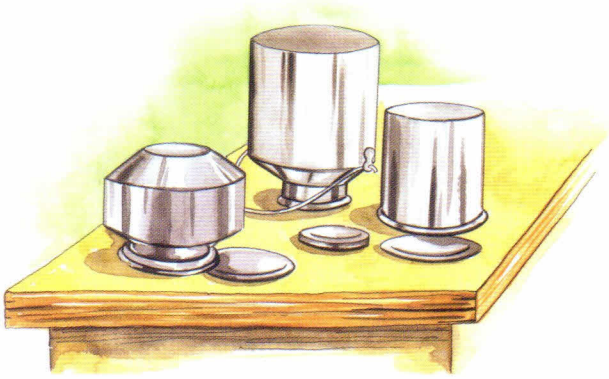

दूध के बर्तनों को सुखाने के लिये उन्हें धोकर उल्टे रखने चाहिये

दूध की इस कहानी को सुनने के बाद बनवारी और राधा ने गंगा के बताये रास्ते पर चलना शुरू कर दिया । पहले तो गंगा का इलाज डेरी के पशुओं का इलाज करने वाले डॉक्टर से कराया । सही इलाज होने से गंगा जल्दी स्वस्थ हो गयी । राधा ने गंगा की बतायी सारी बातों का अच्छी तरह पालन किया । गंगा और जमुना के रहने की जगह और आसपास के माहौल को राधा और बच्चों ने साफ-सुथरा किया ।

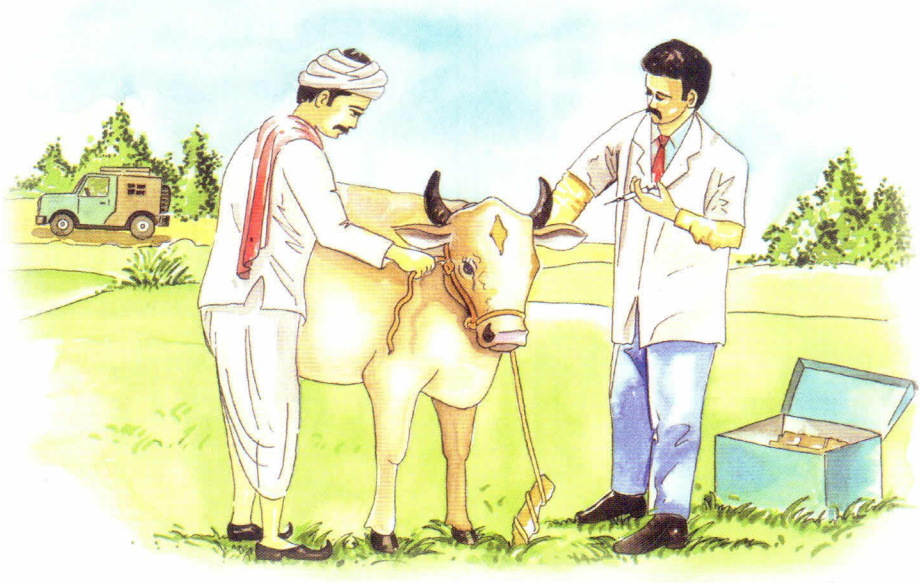

गंगा का इलाज हुआ, बनवारी के घर में खुशी लौट आई

इससे गंगा का दूध स्वच्छ और ज़्यादा निकलने लगा । बनवारी के परिवार की आमदनी बढ़ गई और वह पहले की तरह खुशहाल हो गया । अब बनवारी एवं राधा और दूधारु पशु घर लाने की सोचने लगे ।

साफ-सुथरा और निरोगी पशु

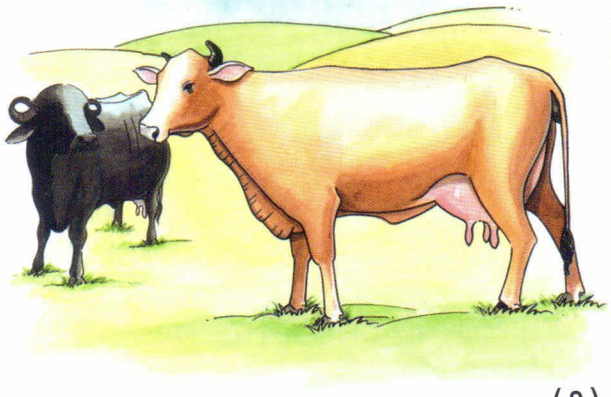

(१)

पशु रखने की साफ-सुथरी जगह

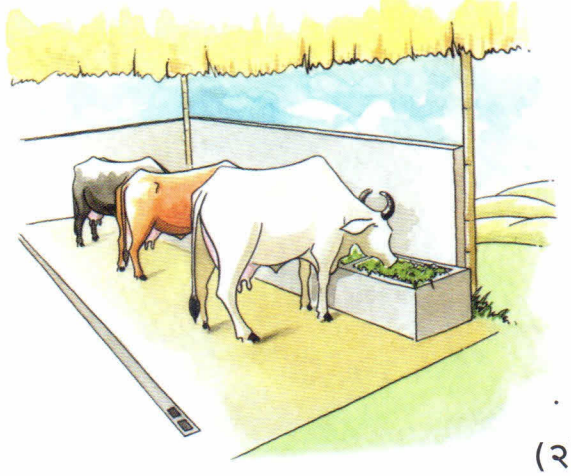

(२)

साफ पीने का पानी

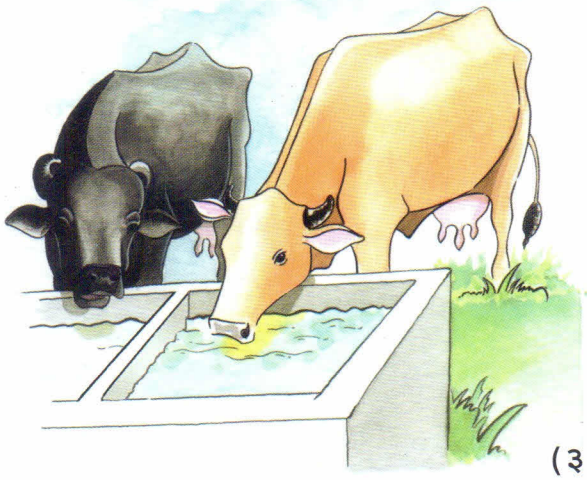

(३)

साफ-सुथरे स्टेनलेस स्टील के बर्तन

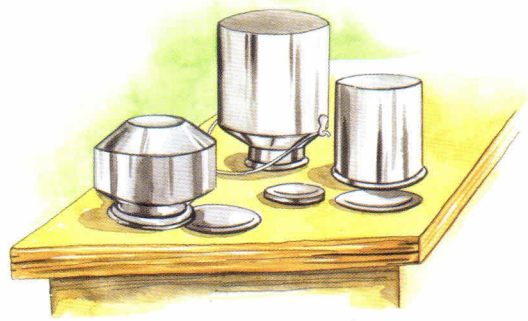

(४)

दूध दुहने से पहले हाथों को साबुन से धो लेना चाहिये

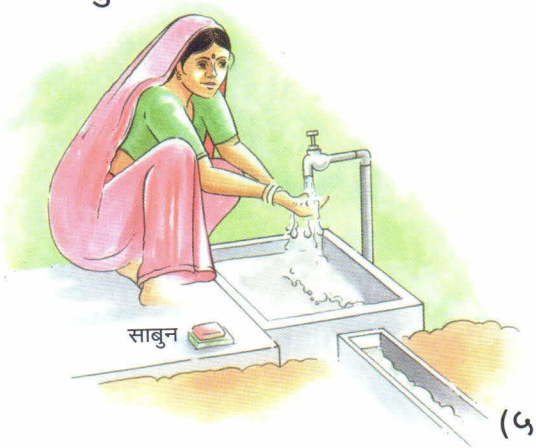

(५)

थनों को साफ पानी से धोकर साफ धुले हुए कपड़े से सुखाना चाहिये

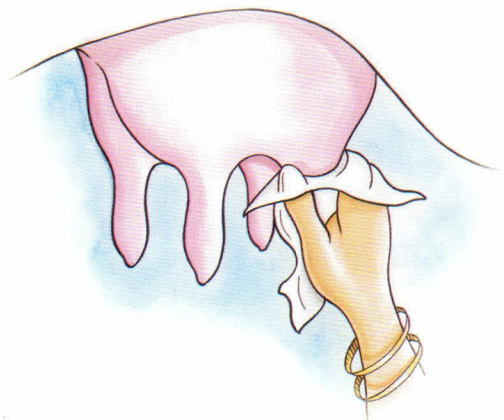

(६)

दुहने से पहले हर थन से
एक-दो धार दूध
निकाल कर फेंक देना चाहिये

(७)

साफ-सुथरे और निरोगी
दूध दुहने वाले

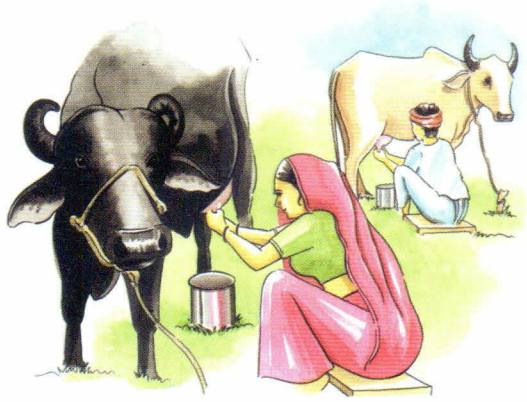

(८)

दूध देते पशु को हरा चारा खिलाएँ

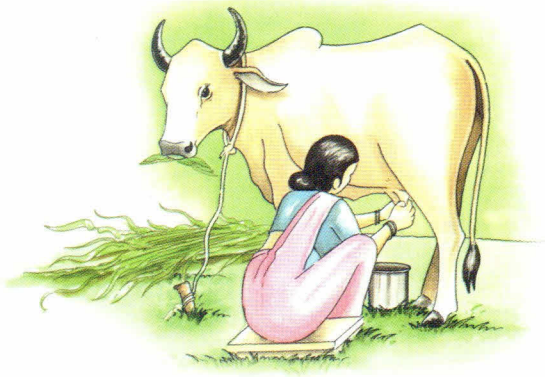

(९)

दुहने के बाद थनों को साफ पानी से
धोना चाहिये और जीवाणुनाशक घोल में
डुबोना या उन पर घोल छिड़कना चाहिये

जीवाणुनाशक स्प्रे और घोल

(१०)

समिति तक दूध ढककर जल्दी
पहुँचाना चाहिये

(११)

दूध को जल्दी ठंडा करने की मशीन

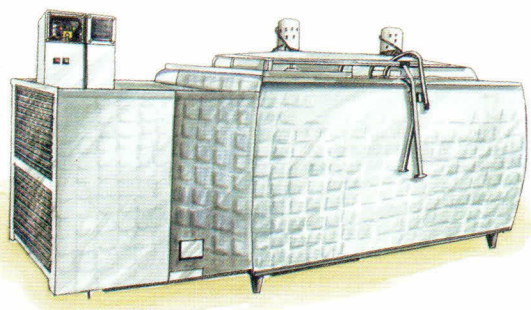

(१२)

© The Copy Right reserved with the National Dairy Development Board, Anand 388 001, India. (R 1-April 2004)

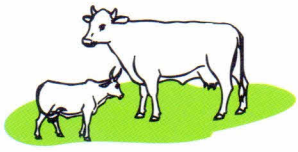

कभी सुना है संगीत की धुन सुन गाय ज़्यादा देती है दूध ।

पुराणों में संगीत को ईश्वर माना गया है ।
और आयुर्वेद ने इस सोच पर ज़ोर दिया है कि
बड़े से बड़ा रोग संगीत से ठीक हो सकता है ।
खोज-परख से मालूम पड़ा है कि पशु भी
संगीत का मज़ा लेते हैं ।
संगीत सुनाने से
गाय/भैंस राहत महसूस करते हैं ।
दुहते वक़्त मधुर संगीत बजायें
और नतीजा खुद जान जायें ।